TIGER WATCH RANTHAMBHORE

राजस्थान के बाघों का संसार

(अरावली, विंध्यानचल, बाघ, विविधता और पारिस्थितिकी)

टाइगर वॉच

टाइगर वॉच, एक गैर-सरकारी संरक्षण संस्था, स्वर्गीय फतेह सिंह राठौड़ और उनके उत्साही सहयोगियों के प्रयासों का परिणाम है। इसकी स्थापना वर्ष 1997 में बाघों और उनके प्राकृतिक आवासों, यानी जंगलों को बचाने के उद्देश्य से की गई थी। टाइगर वॉच का दृष्टिकोण केवल बाघों की सुरक्षा तक सीमित नहीं है। यह संस्था बाघों के आसपास रहने वाले समुदायों के कल्याण के लिए भी समान रूप से प्रतिबद्ध है। यह न केवल बाघों के संरक्षण के लिए काम करता है, बल्कि स्थानीय लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने, उनके बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने और उनके लिए रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए भी समर्पित है। संस्था का मानना है कि मानव और वन्यजीव सह-अस्तित्व तभी संभव है जब स्थानीय समुदायों को संरक्षण प्रयासों में सक्रिय रूप से शामिल किया जाए और उन्हें सशक्त बनाया जाए।

2005-2006 में टाइगर वॉच द्वारा पकड़वाये गए अनेक कुख्यात अवैध शिकारी गैंग्स रणथम्भौर के बाघों के संरक्षण के इतिहास में एक निर्णायक क्षण साबित हुए। टाइगर वॉच ने अथक प्रयास करते हुए अब तक (2024) वन विभाग और पुलिस के साथ मिलकर लगभग 170 शिकारियों को धर दबोचा है, दर्जनों अवैध हथियार और विस्फोटक सामग्री बरामद की है, और वन्यजीवों के अंगों, खालों आदि की तस्करी के कई मामलों का भंडाफोड़ किया है। इन कार्रवाइयों ने न केवल बाघों की सुरक्षा सुनिश्चित की है, बल्कि वन्यजीव अपराधों के नेटवर्क को भी ध्वस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

टाइगर वॉच के अन्य कार्यक्रम जैसे **मोग्या शिक्षा** के 10 केंद्र अलग अलग गाँव में मोग्या समुदाय के बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा प्रदान कर रहा है जो उन्हें बेहतर भविष्य के लिए तैयार कर रहा है। वहीं, **बाघ मित्र** कार्यक्रम के माध्यम से टाइगर वॉच चार जिलों के लगभग 26,500 बच्चों तक पर्यावरण जागरूकता का संदेश फैला रहा है, उन्हें प्रकृति के प्रति संवेदनशील बना रहा है। मोग्या जाती की लड़कियों के लिए **बाघ परी**, विस्थापित ग्रामीण परिवारों की लड़कियों के लिए **वन्य सखी** और वनों के नज़दीक बसे ग्रामीण बच्चों के लिए **डिजिटल एजुकेशन प्रोग्राम** जैसे रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम स्थानीय लोगों, खासकर महिलाओं और युवाओं को रोजगार से जुड़े कौशल सीखने और आत्मनिर्भर बनने में मदद कर रहे हैं।

टाइगर वॉच **वैज्ञानिक अनुसंधान** में भी सक्रिय रूप से भाग लेता है। इसके वैज्ञानिक प्रयासों के फलस्वरूप ही भारत सरकार ने **सियागोश (कैराकल),** एक प्रकार की छोटी बिल्ली, को **स्पीशीज रिकवरी प्रोग्राम** में शामिल किया है, जो इस दुर्लभ प्रजाति के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। टाइगर वॉच की **टाइगर मॉनिटरिंग टीम** आज भी राजस्थान के महत्वपूर्ण बाघ अभयारण्यों, मुख्यतः रणथम्भौर, धौलपुर-करौली और रामगढ़ विषधारी में बाघों की सुरक्षा के लिए समर्पित है। यह टीम नियमित रूप से बाघों की गतिविधियों पर नजर रखती है और वन विभाग के साथ मिलकर काम करती है।

संक्षेप में, टाइगर वॉच बाघों और उनके पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाता है। इस संगठन ने अपने दृढ़ संकल्प, वैज्ञानिक तरीकों, और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से वन्यजीवों और मानव समुदायों के बीच सह-अस्तित्व को सुनिश्चित करने में अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है, जिससे सरकारी प्रयासों को भी मजबूती मिली है।

राजस्थान के बाघों का संसार

(अरावली, विंध्यानचल, बाघ, विविधता और पारिस्थितिकी)

लेखक

प्रवीण सिंह

मीनू धाकड़

धर्मसिंह गुर्जर

डॉ धर्मेन्द्र खांडल

सहयोग

PETRONET LNG LIMITED

लेखक
प्रवीण सिंह (rewritingpraveen@gmail.com)
मीनू धाकड़ (dhakad13@gmail.com)
धर्मसिंह गुर्जर (dharmsingh0111@gmail.com)
डॉ धर्मेन्द्र खांडल (dharmkhandal@gmail.com)

प्रथम संस्करण: 2025

समर्थक:
Petronet LNG Ltd.
Dieter & Liz Gutmann

कॉपीराइट सुरक्षित

©Tiger Watch, Ranthambhore

चित्र सौजन्य: पब्लिक इंटरनेट डोमेन
इन सभी चित्रों के कॉपीराइट् संबंधित कलाकार के पास है

www.tigerwatch.net
www.rajasthanbiodiversity.org
मुद्रक: जयपुर प्रिंटर्स, जयपुर

मा वनं छिन्धि सव्याघ्रं मा व्याघ्रान् निनशन्वनात्।

वनं हि रक्ष्यते व्याघ्रैः व्याघ्रान् रक्षति काननम्॥

~ उद्योगपर्व, महाभारत

अर्थात:

"बाघों से युक्त वन को मत काटो, और न ही वन से बाघों का नाश करो।

वन की रक्षा बाघ करते हैं, और बाघों की रक्षा वन करता है।"

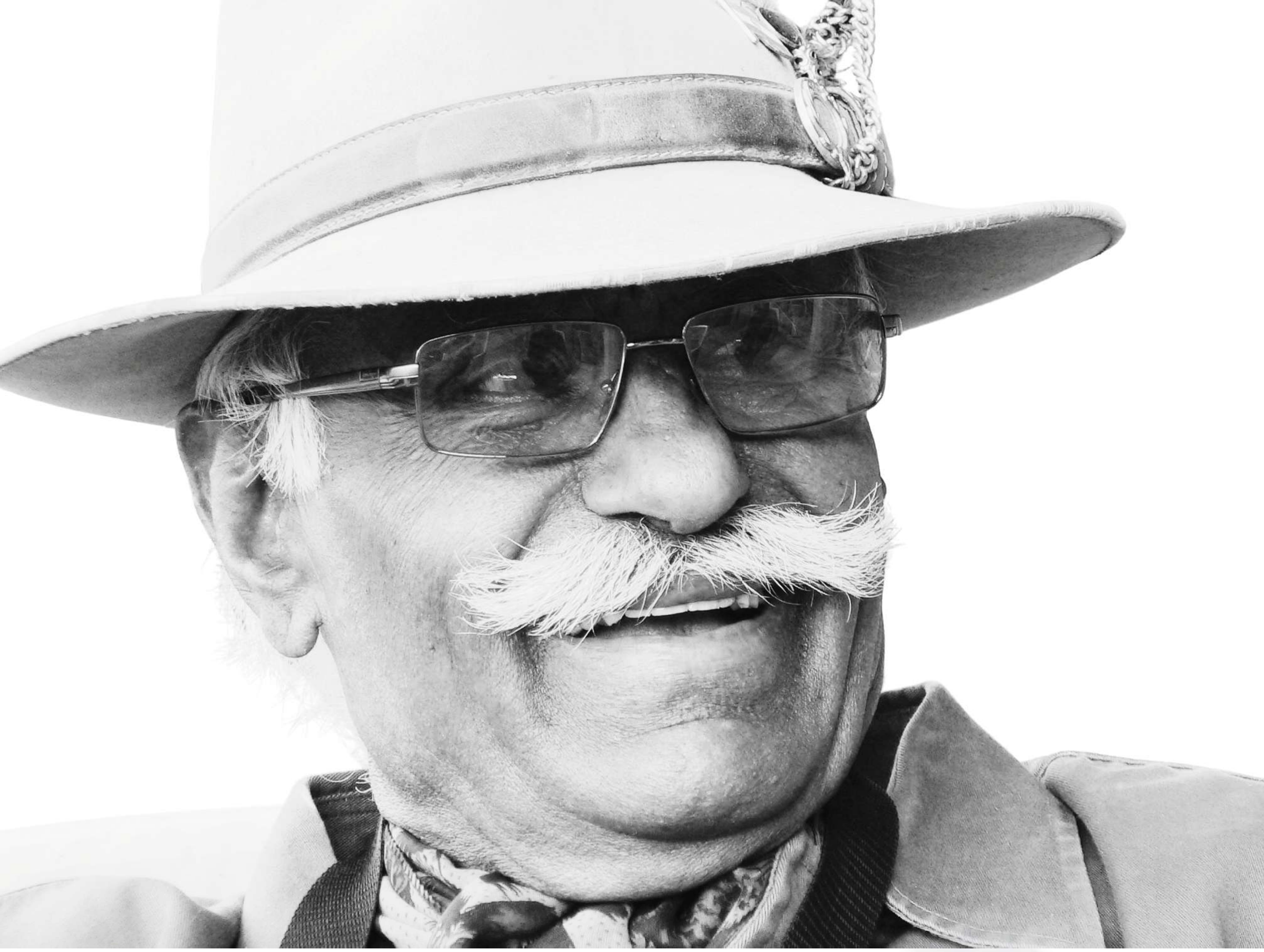

यह पुस्तक स्वर्गीय फतेह सिंह राठौड़ को समर्पित है, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन रणथम्भौर और उसके बाघों की सेवा में समर्पित कर दिया। उनकी अदम्य भावना और अथक प्रयासों ने रणथम्भौर को बाघों के लिए एक सुरक्षित आश्रय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आभार

हम अपनी पुस्तक "राजस्थान के बाघों का संसार" के प्रकाशन के इस महत्वपूर्ण अवसर पर उन सभी व्यक्तियों और संगठनों का धन्यवाद और आभार व्यक्त करते हैं, जिनके योगदान के बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता।

हम विशेष रूप से श्री फतेह सिंह राठौड़ (टाइगर वॉच के संस्थापक) के आभारी हैं, जिनकी दूरदर्शिता और नेतृत्व के कारण यह संगठन न केवल राजस्थान के बाघों, बल्कि सम्पूर्ण वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित हुआ है।

साथ ही, हम श्री इस्कंदर ललजी (अध्यक्ष), श्री गोवर्धन सिंह राठौड़ (उपाध्यक्ष), श्री आशुतोष महादेविया (सचिव), और टाइगर वॉच के सभी बोर्ड सदस्यों का आभार व्यक्त करते हैं, जिनकी प्रेरणा और समर्थन से हम अपने लक्ष्यों की ओर निरंतर अग्रसर हैं।

हमारे सहयोगियों **डाइटर और लिज़ गुटमैन और पेट्रोनट एलएनजी लिमिटेड** का भी हम धन्यवाद करते हैं, जिनके समर्थन से हमारी योजनाएँ साकार हो पाई हैं।

हम ईशान धर का भी आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमारे सभी समर्थकों के साथ संवाद की जिम्मेदारी बखूबी निभाई और सुनिश्चित किया कि किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान समय पर हो सके।

वन विभाग के अधिकारियों का भी हम धन्यवाद करते हैं, विशेष रूप से श्री अरिजीत बनर्जी का, जिन्होंने टाइगर वॉच के साथ खड़े रहकर और हमारे कार्यों का समर्थन किया। इसके अलावा, बाघ मित्र कार्यक्रम के शिक्षक, हरी मोहन गुर्जर एवं उनकी टाइगर ट्रैकिंग टीम और मीठालाल गुर्जर एवं उनकी मोग्या शिक्षा कार्यक्रम के शिक्षक, जिन्होंने विभिन्न तरीकों से हमारा साथ दिया, उनका हम दिल से धन्यवाद करते हैं।

अंत में, हम उन सभी का आभार व्यक्त करते हैं, जिनकी मेहनत और समर्थन से यह पुस्तक और हमारे प्रयास संभव हो पाए हैं।

अनुक्रमणिका

#	विषय	पेज
	प्रस्तावना	
1	बाघों का महत्त्व	01
	• बाघ क्यों बचाना है ?	02
2	अरावली-विंध्यानचल बाघ क्षेत्र	09
3	राजस्थान के प्रमुख टाइगर रिजर्व	13
	• रणथम्भौर टाइगर रिजर्व	14
	• मुकुन्दरा हिल्स टाइगर रिजर्व	15
	• रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व	16
	• धौलपुर-करौली टाइगर रिजर्व	17
4	जैव विविधता की आधारभूमि	19
	• बाघों का अद्भुत संघर्ष: दुनिया का सबसे शुष्क पर्यावास	20
	• बाघ क्षेत्र	21
	• अरावली-विंध्यानचल की जैव विविधता	22
	• अरावली-विंध्यानचल के वन	23
	• वन का निर्माण	31
5	वन्यजीव और उनका संसार	35
	• **स्तनधारी जीव**	36
	• बिल्ली परिवार	38
	• भालू	41
	• कुत्ता परिवार	42
	• लक्कड़बग्घा	44
	• खुरदार	45
	• बंदर परिवार	49
	• सेही या पॉर्क्यूपाइन	50
	• सिवेट एवं नेवले	51
	• ऊदबिलाव	53
	• चमगादड़	54
	• खरगोश	55
	• चूहा परिवार या कृन्तक	56
	• चींटीखोर (पैंगोलिन)	57
	• **पक्षी जगत**	59
	• **अरावली-विंध्यानचल के सामान्य पक्षी**	63

#	विषय	पेज
	• **उभयचर**	**93**
	• **सरीसृप**	**97**
	• सर्प	**100**
	• छिपकली	**107**
	• मगर एवं घड़ियाल	**109**
	• कछुए	**111**
	• **कीट और अकशेरुकी जीव**	113
	• कीट	114
	• चींटियाँ	115
	• दीमक	116
	• तितलियाँ और पतंगे	117
	• मधुमक्खियाँ	120
	• मकड़ियाँ	122
6	एथोलॉजी (Ethology) - वन्यजीवों का व्यवहार	125
7	पारिस्थितिकी (Ecology)	129
8	संरक्षण जीव विज्ञान	137
9	सतत विकास	145
	• SDG संबंधी नीतियाँ	146
	• वाइल्डलाइफ लॉ	147
	• मानव-वन्यजीव संघर्ष	149
10	विकास (Evolution)	153
11	विज्ञान में नामकरण (Taxonomy) और स्थानीय शब्दावली	157
12	राजस्थान के प्रमुख संरक्षणविद्	163
13	संवेदनशीलता की प्रेरणादायक गाथाएँ	168
	• खेजड़ली और अमृता देवी की कहानी	169
	• जंगल की गोद में जन्मी एक महान गाथा	172
	लेखक परिचय	

प्रस्तावना

“राजस्थान के बाघों का संसार” किताब यहाँ की अद्भुत जैव विविधता पर आधारित है जो विद्यार्थियों से अधिक शिक्षकों को इस क्षेत्र के प्रति जागरूक करेगी। यह पुस्तक अरावली-विंध्यांचल के बाघ क्षेत्र के बारे में जानकारी का खजाना है, जो राजस्थान के पूर्वी हिस्से में फैला हुआ है और बाघों, बघेरों, भालुओं, हिरणों और विभिन्न प्रकार के पक्षियों का घर है।

इस पुस्तक में, हम आपको इस क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं, वनस्पतियों और जीवों की विविधता से रूबरू कराएंगे। आप जानेंगे कि कैसे बाघों ने इस शुष्क और कठोर वातावरण में जीवित रहने के लिए अनोखे अनुकूलन विकसित किए हैं। साथ ही, आप पौधों, पक्षियों, सरीसृपों और अन्य जीवों के बारे में भी रोचक जानकारी प्राप्त करेंगे जो इस क्षेत्र को अपना घर कहते हैं।

यह पुस्तक न केवल शिक्षकों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है, बल्कि सभी प्रकृति प्रेमियों के लिए भी ज्ञानवर्धक है। हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक आपको अरावली-विंध्यांचल बाघ क्षेत्र की जैव विविधता की सराहना करने और इसके संरक्षण के लिए प्रेरित करेगी।

यह पुस्तक विशेष रूप से उन शिक्षकों के लिए उपयोगी होगी जो छात्रों को अरावली-विंध्यांचल बाघ क्षेत्र के बारे में पढ़ाना चाहते हैं। इसमें दी गई जानकारी और चित्र छात्रों को इस क्षेत्र की जैव विविधता को समझने और उसकी सराहना करने में मदद करेंगे।

हमें विश्वास है कि यह पुस्तक शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए एक मूल्यवान संसाधन साबित होगी और अरावली-विंध्यांचल बाघ क्षेत्र के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद करेगी।

लेखक परिचय

प्रवीण सिंह: प्रवीण सिंह फील्ड बायोलॉजिस्ट हैं, जो 2023 में टाइगर वॉच से जुड़े। वे फील्ड टीमों द्वारा एकत्रित विशाल डेटा को सुव्यवस्थित करने के साथ-साथ संगठन के सभी चल रहे कार्यक्रमों का समन्वय करते हैं। प्रवीण 'राजस्थान बायोडायवर्सिटी' के प्रबंधक संपादक के रूप में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

मीनू धाकड़: मीनू ने 2017 से पाँच वर्षों तक फील्ड बायोलॉजिस्ट के रूप में कार्य किया और इस पुस्तक के निर्माण में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल इसकी रूपरेखा तैयार की, बल्कि पुस्तक को एक स्पष्ट दिशा और स्वरूप भी प्रदान किया। मीनू ने टाइगर वॉच के साथ रहते हुए कई उल्लेखनीय शोध कार्य किए, विशेष रूप से भेड़ियों पर, और उनके द्वारा सह-लेखित कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं।

धर्म सिंह गुर्जर: धर्म सिंह 'बाघ मित्र टाइगर शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम' के समन्वयक हैं और पिछले दस वर्षों से टाइगर वॉच से विभिन्न भूमिकाओं में सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। वे मुख्यतः जागरूकता कार्यक्रमों के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिनका उद्देश्य समुदायों में वन्यजीव संरक्षण के प्रति समझ और संवेदनशीलता विकसित करना है।

डॉ. धर्मेन्द्र खांडल: डॉ. खांडल एक अनुभवी संरक्षण जैवविज्ञानी हैं, जो पिछले 23 वर्षों से टाइगर वॉच से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। उनके नेतृत्व में चलाए गए एंटी-पोचिंग अभियानों ने रणथम्भौर के बाघों की सुरक्षा सुनिश्चित की है और कई कुख्यात शिकारियों को पकड़वाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डॉ. खांडल न केवल रणथम्भौर के बाघों की निगरानी में संलग्न हैं, बल्कि इस पूरे टाइगर लैंडस्केप में वन्यजीव संरक्षण और स्थानीय समुदायों के सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं।

Tiger Watch
Ranthambhore Road
Sawai Madhopur, Rajasthan – India
Pin: 322001, Ph: +91 9001507777, www.tigerwatch.net